अचके कहा गइल

ब्रजभूषण

अचके कहा गइल

(ग़ज़ल - संग्रह)

रचनाकार

डॉ० ब्रजभूषण मिश्र

प्रकाशक : —

कबीर भोजपुरी पुस्तकालय

साहेबगंज, करनौल, मुजफ्फरपुर

बिहार-८४३१२५

किताब के नाम	---	अचके कहा गइल
विधा	—	गजल
भाषा	--	भोजपुरी
रचनाकार	—	डॉ. ब्रजभूषण मिश्र
प्रकाशक —	—	कबीर भोजपुरी पुस्तकालय, अलमस्त नगर, साहेबगंज मुज., बिहार, ८४३ १२५
सर्वाधिकार	---	(C) प्रकाशक
संस्करण	—	पहिला 1992 ?
मुद्रक	—	कबीर भोजपुरी पुस्तकालय प्रेस, साहेबगंज, करनौल मुजफ्फरपुर
आवरण	---	टाइम्स ऑफ इन्डिया से साभार । लेजर प्रिंटर्स ,नयाटोला, पटना-४
दाम	—	१०) रुपये ।

ACHKE KAHA GAYEEL A Collection

oF Bhojpuri Gazels

Written by (Dr.) Braj Bhushan Mishra

Price Rs. 10.00 only

सवाद लीं-संवाद दीं

गजल एह घरी प्रायः हर भारतीय भाषा के सर्वाधिक चर्चित काव्य-विधा बा, टटका काव्य-तेवर बा। हिन्दी के त बाते छोड़ीं जवना में अलमगंज गजल रचना हो चुकल बा आ हो रहल बा; गुजराती, मराठी, पंजाबी, कश्मीरी, भोजपुरी, मगही, मैथिली आदि क्षेत्रीय भाषा सब में भी गजल अभिव्यक्ति के प्रमुख माध्यम हो चुकलि बा। काव्य के एह बूढ़ आयातीत विधा के अदा पर लोग अइसन फिदा बा कि कुछ मत पूछीं। साइते कवनो कवि होइहें जे गजल पर हाथ ना अजमवले होइहन। अउर त अउर संस्कृतो में प्रचुर गजल-रचना हो चुकल बा, आ हो रहल बा। गजल-लेखन एगो फैसन बन गइल बा हर भारतीय भाषा में।

गजल अरबी भाषा के (स्त्रीलिंग) शब्द ह आ एकर शाब्दिक अरथ ह प्रेमी आ प्रेमिका के बात-चीत। अरबी में गजल के रूप बड़ा अनगढ़ रहे। तकरीबन १४०० बरिस पहिले जब ईरान पर अरब के आधिपत्य भइल त फारसी भाषा एकरा के अरबी से ग्रहण कइलस। फारसी में गजल के काफी संवर्द्धन भइल, साज-सिंगार आ निखार भेंटाइल। अपना एही सजल सँवरल आ निखरल रूप में गजल भारत-भूमि पर उर्दू के अंगना चउदहवीं शताब्दी में उतरलि जहाँ ऊ अपना रूप-गुन के

पराकाष्ठा पर पहुँच गइलि। अपना प्रारंभिक रूप में गजल मात्र इश्किया शायरी रहलि बाकिर देस-काल आ भाष से एकरा भाव-भूमि का निरन्तर विस्तार भेंटात गइल, आ आज जे गजल हमनो के सोझा बा ऊ गजल के पारंपरिक स्वरूप से नितान्त भिन्न बा। प्रेम का संकीर्ण दायरा से मुक्त हो के गजल आज जिनिगी का विभिन्न पक्षन के उजागर करे वाली कविता बा; खाली व्यक्तिगत पीड़ा के हो ना, सामाजिक पीड़ा के भी अभिव्यक्ति बा। आज गजल के कथ्य आधुनिक संदर्भन आ सामाजिक जनचेतना से जुड़ल बा। गजल आम आदमी का जबान में आम आदमी के कविता बा।

भोजपुरी में गजल लिखे के सिलसिला तेग अली 'तेग' से सुरू भइल। उनका २३ गो गजलन के संग्रह 'बदमास दर्पण' का नाँव से श्री राम कृष्ण वर्मा १८९५ में प्रकाशित करवलन। तेग भारतेन्दु-मंडली के सदस्य रहलन। जवना घरी भारतेन्दु हरिश्चन्द्र हिन्दी में गजल लिखत रहलन, तेग अली 'तेग' भोजपुरी गजल-लेखन में प्रवृत्त रहलन। एह से हिन्दी गजल आ भोजपुरी गजल का समउरिया माने के चाहीं। अइसे त भोजपुरी साहित्य के सब विधा हिन्दी साहित्य के अनुसरण करेली सन बाकिर गजल उर्दू से भोजपुरी में हिन्दी का जरिये ना, सीधे आयातित भइलि आ एकर विकासो बरिसन तक स्वतंत्र रूप से भइल, हालांकि विकास के गति बहुत धीम रहल।

विकास में तेजी तब आइल जब दुष्यन्त कुमार हिन्दी-गजल-क्षेत्र में उतरलन। दुष्यन्त का हिन्दी गजलन से भोजपुरी गजल बहुते प्रभावित भइलि। हिन्दिये अस भोजपुरियो में गजल-लेखन एगो फैसन के रूप ले लिहलस। आज भोजपुरी के पास गजल लिखनिहार लोगन के बहुते बड़ सूची बा।

अइसे त भोजपुरी में मुलुकन के गजल लिखाइल बा, लिखा रहल बा आ छप रहल बा बाकिर प्रकाशित स्वतंत्र गजल-संग्रहन के संख्या बहुते कम बा। मात्र तीन गो स्वतंत्र-गजल-संग्रह अबहीं ले प्रकाशित भइल बाड़ी सन—जगन्नाथ के 'लर मोतिन' के जे १९७७ में प्रकाशित भइल, अविनाश चन्द्र विद्यार्थी के 'पतियात ना केहू' जे १९८७ में प्रकाशित भइल आ जौहर शफियाबादी के 'धरोहर' जे १९९२ में लगले प्रकाशित भइल ह। डा० ब्रज भूषण मिश्र के 'अचके कहा गइल' सम्भवतः चउथा प्रकाशित स्वतंत्र गजल-संग्रह होई।

डा० ब्रज भूषण मिश्र भोजपुरी के ख्यातिलब्ध कवि-लेखक आ विद्वान हउवन। 'अचके कहा गइल' इनकर प्रथम गजल-संग्रह ह। अपने सभे जानींला कि जे कुछ अचके कहा जाला, ऊ बहुते स्वाभाविक होला। ऊ अन्तर के आवाज होला। तनिका कृत्रिमता ना होखे ओह में। साइत अचके कहा गइला का चलते हो मिश्र जी का गजलन में सराहे लायक साफगोई आ गइल बा। आ

साइत एही का चलते हो इनकर कुल्हि के कुल्हि गजल बोल-चाल का भाषा के सहज स्वाभाविक स्वरूप से सटल बाड़ी सन। भाषा के अतिवादी स्वरूप से तनिको छुआई नइखे एह गजलन के। भाषा सुबोध बा, सरस बा, सुघर बा, सराहे जोग बा।

मिश्र जी में गजल खातिर अपेक्षित आनुभूतिक आ वैचारिक उष्मा खब बा। उनका गजालन का कथ्य के उत्स आधुनिक परिवेश बा, जान-चेतना बा। गजाल मिश्र जी खातिर परिवेशगत सामाजिक पीड़ा के अभिव्यक्ति के माध्यम बा—

हम सबके आँसुअन के गिजान बा ग़ज़ल
दुख भरल राग के पहचान बा ग़ज़ल

आज सगरो मचल बा—महाभारत
हो गइल लहू - लुहान बा ग़ज़ल

बह रहल बाड़ी सगरो शोक के गंगा
जीअत लाश से भरल मसान बा ग़ज़ल

लउके कतहीं ना, सुधियन के मेला
लागत सुनसान ह वीरान बा ग़ज़ल

सामाजिक विसंगति पर व्यंग्य इनका अधिकांश गजालन में मिली। कुछ बानगी देखल जाउ—

बारूद के ढेर पर खड़ा होके लोग
अहिंसा के पाठ पढ़ावे निकलल

रचत रहल षड्यंत्र जे मन्दिर के छाँह में
देखते - देखते बहुत बड़ा ऊ संत हो गइल

आज के जुग नैतिक मूल्यन का पतन के जुग बा। आदमी आदमी के बेवहार से तबाह बा। हर आदमी निरासा, भटकाव आ अस्थिरता से आक्रान्त बा।

पंच भइल घर के सवांग
माफ हर गुनाह हो गइल
आदमी के बेवहार से
आदमी तबाह हो गइल

स्थिति अतना भयावह बा कि सभ केहू एकरा में सुधार के उम्मीद छोड़ देले बा बाकिर गजलकार निरास नइखे। ओकर दृष्टिकोण आशावादी बा। एही से ऊ सभका से कहता —

चीर सके फइलल अन्हार के छाती
चलीं फेरू उम्मीद के दिया जरावल जाए

'अचके कहा गइल' का गजलन बहर देखला पर साफ बुझा जाता कि अपना प्रारम्भिक प्रयास में ही गजल-कार अपना अदम्य साहस के परिचय देले बा आ कुछ हद सफलो भइल बा। छोट-छोट बहरन में गजल लिखल, भावना का असीम विशालता के समग्र रूप से खाली दू पंक्ति में आ ऊहो छोट से छोट पंक्ति में समेटल सहज काम ना होखे। ई काम कवनो समर्थ गजलकारे कर सकेला।

चर्चित संग्रह के अधिकांश, गजल छोट बहर में बाड़ी सन। संग्रह में नया बहर का खोज के आग्रह त बा बाकिर गजल का शास्त्रीय शिल्प-विधान से दूर हटे के दुराग्रह नइखे। कुछ बहरन के नमूना देखीं—

रूप मन में उतार के देखीं
केहू आई पुकार के देखीं

X X X X

केहू न पास बा
केहू न खास बा

गजल बहुत नाजुक विधा ह—मिजाज आ बनावट दूनों में एकरा के सम्हारल बड़ा मुश्किल काम होला। एक-एक शब्द के सही जगह पर नगीना अस जड़े-मढ़े के परेला, ताकि गजल सुन्नर, सुभेख हो सके आ ओकर लयात्मकता बनल रहे।

मिश्रजी गजल के मिजाज पकड लेले बाड़न आ एकरा बनावटो के प्रति सचेत भी जरूरे रहल होइहन बाकिर साइत प्रारम्भिक प्रयास भइला का वजह से कुछ गजलन के लयात्मकता निर्बाधित नइखे रह सकल।

कुल्हि मिला के 'अचके कहा गइल' अपना कथ्य-कौशल, शिल्प - सौष्ठव आ भाषिक संरचना खातिर सराहे जोग कृति बा।

अइसन मनहर कृति खातिर मिश्रजी के बहुते बहुत बधाई।

चीज मिश्रजी के ह। अपने सभ का सोझा एकरा के परोसे के भार हमरा पर सउँपल गइल रहल ह। हम जानतानीं कि परोसलो एगो कला ह आ एकरा खातिर जे लूर-सहूर आ गुन-गिहथान चाहीं, हमरा में नइखे बाकिर हम इहो जानतानीं कि बेलूर-सहूर के परोसला पर चीज के सवाद ना बदले। त लीं 'अचके कहा गइल' अपने सभ का सोझा बा। एकर सवाद लीं आ संवाद दीं कि कइसन लागल अपने का ई।

पटना — जगन्नाथ

३१-५-६२

शायद यहाँ है तू

'ग़ज़ल' उर्दू साहित्य की ही आबरू नहीं बल्कि अब यह हिन्दी सहित समस्त भारतीय भाषाओं-बोलियों में समान रूप से आदृत एवं प्रतिष्ठित काव्य-विधा के रूप में स्वीकृत है। इसका सतत विकासोन्मुख रहना इस बात का प्रमाण है कि इसकी यात्रा लोकप्रियता के शिखर की ओर है। गागर में सागर भरने वाले इस काव्य रूप का तीव्रता से लोगों के दिलो-दिमाग पर छाते जाने का मुख्य कारण इसकी गेयता, उसमें निहित संगीत-तत्त्व की प्रचुरता है। ग़ज़लों पर बात करते हुए मुझे डॉ० कुँवर बेचैन की निम्न पंक्तियाँ याद आ रही हैं –

"ग़ज़ल बहुत बड़ी चीज है, बहुत ऊंची और गहरी चीज। उस तक पहुचना, उसे छूना, उसे जानना, उसे समझना सरल काम नही। ग़ज़ल की तलाश ही गजल की ओर बढ़ना है और ग़ज़ल को पा लेना ग़ज़ल से वापसी का नाम है–

यह सोच के मैं उम्र की ऊँचाइयाँ चढ़ा
शायद यहाँ, शायद यहाँ, शायद यहाँ है तू ॥
पिछले कई जन्मों से तुझे ढूँढ रहा हूँ
जाने कहाँ, जाने कहाँ, जाने कहाँ है तू ॥

लगभग यही तजुर्बा फिराक साहब का भी है—

"उम्र भर का है तजुर्बा अपना
शायरी उम्र भर नहीं आती।"

जब इतने बड़े शाइरों के ये खयालात हैं इस विधा के मोतल्लिक तो हम जैसों के लिए इससे बढ़-चढ़कर कहना शोभा नहीं देता। हमारा प्रयास इसके शैल्पिक तकनीक को समझना और अभिव्यक्ति की नई दिशा की तलाश निरन्तर करते रहना है।

ग़ज़ल-संकलन को फारसी में दीवान कहा जाता है। कोशिश करने से तो शायरी होती नहीं। परिणामतः हर शायर के लिए इतने परिमाण में ग़ज़ल कह पाना सम्भव नहीं हो पाता जिससे 'दीवान' तैयार हो सके। अच्छा दीवान वह होता है जिसमें हर रंग के पुर-असर शेर हों और उसकी शैल्पिक बुनावट ध्यान आकृष्ट करती हो। ग़ज़ल में वर्ण्य विषय के प्रति शायर की तन्मयता आवश्यक है, तभी उसमें अन्तःप्रेरणाजनित मौलिकता के दर्शन होते हैं।

आजकल 'ग़ज़ल' जैसे उर्दू, हिन्दी, गुजराती, मराठी, तेलगु, सिन्धी, पंजाबी और कश्मीरी में लिखी जा रही है; उसी तल्लीनता और व्यापकता के साथ ब्रजभाषा, मगही और भोजपुरी में भी लिखी-पढ़ी जाती है। भोजपुरी ग़ज़लों का इतिहास भी उतना ही पुराना और गुण-

दोषों से परिपूर्ण है जितना अन्य भारती भाषाओं एवं बोलियों का।

हर भाषा में अच्छी ग़ज़ल कहने के लिए प्रारम्भिक शर्त है कि इसके हर शेर के मजमून में कुछ नवीनता हो, रदीफ और काफिये की पाबन्दी रहे और मतले के मिसरों में अन्त्यानुप्रास हो अर्थात् इसके परम्परागत ढाँचे को बिगड़ने नहीं दिया जाए। इन्हीं कोशिशों के साथ सृजन-प्रक्रिया में आकण्ठ डूबे कविवर डॉ० ब्रज भूषण मिश्र का ताजा दीवान हमारे सामने है —भोजपुरी ग़ज़लों का।

अनुभूतियों की वादियों से गुजरते हुए शायर जब वहाँ की गन्ध को आत्मसात कर औरों में बाँटने की लायक इत्र तैयार कर लेता है तो उसके अशआर की खुशबू अनायास ही लोगों को आकर्षित करने लगती है। डॉ० मिश्र को यह हुनर प्राप्त है, तभी तो इनके कलाम में इतना जोर है—

चहुँओर शोर बा कि नया भोर आ रहल
अधरतिये बिना तेल के ढिबरी बुता गइल

X X X X

खाली इमरित पिए के चाहेला
शम्भु हलाहल अब पिअत नइखे

आज की ग़ज़ल का अर्थ महबूब से प्रणय प्रसंगों की अन्तरंग बातें करना ही नहीं अपितु इसके सरोकार सामाजिक समस्याओं की अनुभूति और अभिव्यक्ति से गहरे

जुड़ान का भी है। आज ग़ज़ल चाहे जिस भाषा में लिखी जा रही हो, वह बड़ी ईमानदारी व मुस्तैदी से सामाजिक विसंगतियों का पर्दाफाश कर रही है। वह समाज के हर तबके के लोगों की मुस्कान में शामिल है तो उनके आँसुओं में भी। डॉ० मिश्र के इन शे'रों को देखें—

आज सगरो मचल बा—महाभारत
हो गइल इहाँ लहु-लुहान बा गज़ल

X X X

हर जगहा एक ही बाजार हो गइल बाटे
सभे के इज्जत उधार हो गइल बाटे

X X X

बास आवत बा एह में पड़ गइल कीड़ा
जमकल पानी अस विचार हो गइल बाटे

X X X

इहे रहम का कम बा कि अरथी न उठ सकल
हो चुकल कबे त ई गरदन हलाल बा

जमाने के दर्दो-गम पे दो-चार कवि को कभी तन्हाई में अपने महबूब की याद तड़पाती है, तभी तो वह कह उठता है—

फगुनहठा जब-जब बहल होई
पीर हीयरा के तब बढ़ल होई

X X X

इयाद आई हमार जहिया तहरा
आँख छलकी, मन तरल होई

और फिर यह भी कि—

अइसन फागुन - फागुन नइखे
लग में आपन पाहुन नइखे
पाँव - पाँव बन्हाइल पायल
सबका पायल रूनझुन नइखे

आदमीयत का अवमूल्यन किसी भी सम्वेदनशील व्यक्ति के लिए असहनीय है। साहित्य का मुख्य उद्देश्य आदमीयत की रक्षा के लिए सतत संघर्ष करते रहना भी है। इस सन्दर्भ में कवि की चिन्ता इस पंक्तियों में बड़े सहज एवं प्रभावी ढंग से नुमाया हुई है—

बिका रहल आज सरे बाजार आदमी
बिकनिहार आदमी बा कीननिहार आदमी

इसी ग़ज़ल का एक दूसरा शे'र देखिये जिसमें कवि की संयमित एवं संवेदित वाणी विसंगतियों की ओर किस तरह इशारे करती है—

कब तक ले ढोई बोझ लहू के तेल से
सवारी भो आदमी ह आ सवार आदमी

नैसर्गिक प्रतिभा के स्वामी कविवर मिश्र के कवित्व में अभी और निखार-तराश आने हैं, लेकिन अभिव्यक्ति के जिस मुकाम पर ये खड़े हैं, वहाँ तक पहुँचने के लिए की गई इनकी साधना हमें आश्वस्त करती है कि सफर जारी रखने के लिए इनमें ऊर्जा का अक्षय भाण्डार मौजूद है।

पंजाब की आतंकवादी गतिविधियों पर व्यंग्य के लहजे में कहा गया इनके ये शे'र मेरे कथन के प्रमाण हैं—

अझुराइल बाटे झोंटा में अक्किल सरदार के
बन्दूक भइल गुरदेल अबकी बेर फगुआ में
X X X
जान अदमी के साँसत में एतना रहल
जिनगी जीअत बा, अदमी मर गइल बा

सत्ता के लोभी तथाकथित जन-सेवकों के चारित्रिक स्खलन को कवि ने इस शे'र में बड़ी बेबाकी से उजागर किया है—

हाथ जोड़ जीतला के बात भूल जा
कुर्सी से सट गइल जे सामन्त हो गइल

डॉ॰ मिश्र के ग़ज़ल गुलदस्ते से बतौर बानगी मैंने शे'रों के चन्द फूल चुने हैं; लेकिन, इन शे'रों से अधिक उम्दे और पुख्ते शे'र इस दीवान में मौजूद हैं जो आपके जेहन में हलचल पैदा करने की बेपनाह ताकत रखते हैं। ग़ज़ल में अभिव्यक्ति के नये आयाम तलाशने की उत्कण्ठा जिस शायर में जितनी प्रबल होगी, उसके कलाम उतने ही असरदार और जीवन्त होंगे। खूब खुशी इसी बात की है कि डॉ॰ ब्रजभूषण मिश्र का कवि-कर्म इन आवश्यक तत्त्वों से सम्पृक्त है। इनका यह दीवान ग़ज़ल प्रेमियों के बीच बार-बार पढ़ा और सराहा जाएगा, ऐसा अटूट विश्वास है।

स्थान–ढेवाहाँ, पत्रा॰–कांटी —नीतीश्वर शर्मा 'नीरज'
जिला-मुजफ्फरपुर ५–४–९२
(बिहार)-८४३१०९

हम का कहीं

हमार अबहीं तक कवनो स्वतंत्र काव्य-संग्रह ना आइल रहल ह। सन् १९८२ में 'दू-रंग' नाम से श्री विपिन बिहारी चौधरी जी संगे संयुक्त काव्य-संकलन निकलल, जवना के 'दूसर-रंग' में हमार अठारह गो कविता संकलित रहे। एकरा बाद 'घाटी की आवाज' आ 'आगे-आगे' नामक काव्य संकलन में ओकर सम्पादक लोग हमार पाँच-पाँच गो भोजपुरी कविता प्रकाशित कइल। अब 'अचके कहा गइल' नाम से हमार अलग पहिला काव्य संकलन 'ग़ज़ल' विधा में रउरा सोझा बा। एह संग्रह में एकतीस गो ग़ज़ल बाड़ी स।

'अचके कहा गइल' के रउरा सभन का हाथ तक पहुँचावे के सारा श्रेय 'डॉ॰ धीरज कुमार भट्टाचार्य जी,' संचालक, कबीर भोजपुरी पुस्तकालय का बाटे। बंगला भाषा-भाषी भइला के बावजूद इहाँ का भोजपुरी खातिर जतना कर रहल बानीं, ओतना भोजपुरियन से नइखे होत। अनुज, 'फारूक साहेबगंजवी' के आशीर्वाद देत बानी जे हमरा ग़ज़लन के प्रकाशन में प्रेस में समय दिहलन। अइसहीं 'अखिल' आशीर्वाद के पात्र बाड़न।

हमार ग़ज़ल अगर ग़ज़ल के साँचा में खरा उतरत बीया, त एकर सम्पूर्ण श्रेय हिन्दी में ख्यातिलब्ध गजलगो

आ 'अनुभूतियों के देश' आ 'अक्स के कृतिकार 'श्री नीतीश्वर शर्मा 'नीरज' जी के बा। हमार ग़ज़लन के पहिला श्रोता आ संशोधनकर्त्ता के रूप में हम इहाँ के आभारी बानी। इहाँ का हिन्दी में एह पुस्तक के भूमिका लिख के हमरा पर कृपा कइले बानी।

भोजपुरी के वरिष्ठ रचनाकार आ सुप्रसिद्ध ग़ज़लकार 'श्री जगन्नाथ जी' के हम सर्वदा आभारी रहब। जब से उहाँ से हमार परिचय भइल, राँची में, तबहीं पे उहाँ के स्नेह हमरा प्राप्त रहल बा। भोजपुरी में एह ग़ज़ल-संग्रह के भूमिका लिख के उहाँ का हमरा पर स्नेह कइले बानी।

भोजपुरी साहित्य आन्दोलन से हमरा के जोड़े के काम भोजपुरी परिवार, पतरातू के संचालक आ कवि 'श्री विपिन बिहारी चौधरी जी' के बा। उहाँ का साथे-साथे 'डॉ० पशुपति कुमार विप्लव,' 'श्री रमेश चन्द्र झा कृष्णधारी', (डा.) राजेन्द्र ठाकुर' 'निगम' आ 'डा० प्रेम नाथ 'पथिक' का एह पुस्तक का 'प्रकाशन से प्रसन्नता होई।

पुस्तक निकला से 'पं. गणेश चौबे जी' बहुत खुश होखब काहे से उहाँ के आशीर्वाद हमेशा साथ बा। भोजपुरी आन्दोलन के अगुआ 'पाण्डेय कपिल जी' के बहुते आभारी बानी, जे पुस्तक प्रकाशन के जानकारी से प्रसन्न भइलीं आ भरल दुपहरिया में भूमिका ले आवे खातिर

जगन्नाथ जी तक गइलीं। 'श्री नगेन्द्र प्र० सिंह जी' आ 'प्रो० ब्रजकिशोर जी' से जब से सम्पर्क भइल बा, इहाँ सबके स्नेहिल शुभकामना हमरा साथे रहल बा।

एह पुस्तक का प्रकाशन में 'भाई भगवती प्र० द्विवेदी' आ 'ब्रजकिशोर दूबे जी' के भूमिका महत्त्वपूर्ण बा जे पुस्तक के भूमिका लिखवावे में तत्परता देखावल। जुझारू भोज-पुरिया 'पशुपति नाथ सिंह' के भूमिका कवनो ना कवनो प्रकार से हमरा के मदद करत आ रहल बा। नया दोस्त 'अतुल कुमार जी' के सहयोग हमरा पुस्तक का मुख-पृष्ठ के डिजाइन आ छपाई मे मिलल।

'प्रो० सतीश्वर सहाय वर्मा 'सतीश', 'कुमार विरल', 'सुरेन्द्र सुमन', 'डॉ० रविन्द्र उपध्याय', 'डॉ० वीरेन्द्र नारायण पाण्डय', 'डॉ० रिपुसूदन प्र० श्रीवास्तव', 'आनन्द सन्धिदूत', 'भोलानाथ गहमरी', 'सूर्यदेश पाठक 'पराग', 'सुनील कुमार पाठक' आ छोट भाई 'इन्दुभूषण' के स्नेह-सहयोग कवनो ना कवनो प्रकार हमरा मिलत रहल बा।

ग़ज़ल उर्दू के काव्य विधा ह, जे आज खूब फल-फूल रहल बा। भोजपुरी में ग़ज़ल के माहिर कवियन के संख्या कम नइखे आ तेज से लेके आज तक एगो पोढ़ परम्परा कायम बा। हमार ग़ज़ल कहाँ तक ग़ज़ल के

साँचा में सही ढरल बाटे आ युग-चेतना से केतना सम्पन्न बा, ई पाठक-समीक्षक लोग जानो ! हम त अपना एगो अधूरा ग़ज़ल के एगो शे'र कह के कलम रोक रहल बानी—

का खूब कहलें तेग, जगन्नाथ आ सतीश
हमहूँ कहीं ग़ज़ल, ई मन में हुलास बा

कांटी थरमल
अदरा, १९९२

—ब्रजभूषण

ग़ज़ल-क्रम

१	सभा में आम हाल के	—	१
२	हर जगहा एकहीं बजार	—	२
३	घेरले चारू ओर से	—	३
४	जहाँ - जहाँ कुछ करे के	—	४
५	जइसन एहर बा, ओहर बाटे	—	५
६	खूल जाए तकदीर	—	६
७	हम सबके आँसुअन के	—	७
८	बिका रहल आज सरे	—	८
९	फगुनहटा जाब - जाब	—	९
१०	फेटा ना ढेबुआ धेल	—	१०
११	सत से बिछिल गइल	—	११
१२	बात मन में रहे	—	१२
१३	कवनो दवा के	—	१३
१४	पानी तेरूआर पर	—	१४
१५	सभे के हाल	—	१५
१६	लिखल ई माथे के	—	१६
१७	बुत रहल आग	—	१७
१८	अइसन फागुन, फागुन नइखे	—	१८
१९	सगरो बाह - बाह हो गइल	—	१९
२०	केहू न पास बा	—	२०

२१	निकाल लिहल गइल बा रस	—	२१
२२	लइका के लट्टू अइसन	—	२२
२३	रहे चानणी छितनार	—	२३
२४	जर रहल बानी जवना	—	२४
२५	जंगलो व्यवस्था में	—	२५
२६	दउरल नजर हमार	—	२६
२७	खा - खा के आश्वासन	—	२७
२८	पास - पास रहियो के	—	२८
२९	कहीं सुदो ना	—	२९
३०	रूप मन में उतार के देखीं	—	३०
३१	दिल के सालेला जे	—	३१

०:—:०

एक

सभा में आम हाल के चर्चा जे आ गइल
ग़ज़ल में साँच बतिया अचके कहा गइल

चहुँओर शोर बा कि नया भोर आ रहल
अधरतिये बिना तेल दियरी बुता गइल

बान्हे के बान्ह अबहीं, होते रहल विचार
असों त फेरू बाढ़ में सब कुछ दहा गइल

उपजल अनाज एतना, उनकर छपल बयान
कई दिन, कई रात भूखे सहा गइल

सद्भाव होखे कायम, समिति बा बन रहल
तबहीं त कतहीं केहू दंगा करा गइल

दू

हर जगहा एकहीं बजार हो गइल बाटे
सभे के इज्जत उधार हो गइल बाटे

अइसन बुझाता, रोग छूटबे ना करी
डागदर खुदही बेमार हो गइल बाटे

घेंट धइके अब केकर रोईं भइया
चिन्हारो त अनचिन्हार हो गइल बाटे

बास आवत बा, एह में पड़ गइल कीड़ा
जमकल पानी अस विचार हो गइल बाटे

केकरा खातिर ग़ज़ल लिखीं बुझाए ना
जाहिल जब पढ़निहार हो गइल बाटे

तीन

घेरले चारू ओर से एतना सवाल बा
आदमी का चैन से जिअल मोहाल बा

जिनगी के बोझ से बा झुक गइल कमर
लोग ओढ़ लेले एतना जवाल बा

इहे रहम का कम बा कि अर्थी न उठ सकल
हो चुकल कबे त ई गरदन हलाल बा

गली-गली में दंगा फसाद मोड़ पर
डेगे-डेग पर इहाँ बहुते बवाल बा

का सुनाईं सबसे आपन हवाल हम
उहे हवाल बा जे सभकर हवाल बा

चार

जहाँ - जहाँ कुछ करे के पहल होई
उहें - उहें केहू के लहल होई

जहाँ से उजाड़ल गइल ह आजु फूस
उहें खड़ा काल्हु कवनो 'महल होई

नीचे जे झाँकेला ऊपर से लोग
कुछ गाँव गंगा क बाढ़ में दहल होई

आजु जवन गइल ह टूट फेरू लोगे
ऊ जरूर आपन सपना रहल होई

पाँच

जइसन एहर बा, ओहर बाटे
आदमी पर हर तरफ कहर बाटे

कहीं जरूर कुछ गड़बड़ बाटे
ऊपर ना बा, जे भीतर बाटे

का पता दीं घर के अपना मितउ
बिन पता के आपन, सफर बाटे

जमीन से लउके ना उगत सूरज
बसल कइसे ई शहर बाटे

पहुँचा ना सके मंजिल तक जे
अइसने बनावत लोग डगर बाटे

बन ना सकल ग़ज़ल आपन बढ़िया
ठीक से बन्हाइल ना बहर बाटे

छव

खुल जाए तकदीर, लड़ाई बाकी बा
नया बने तस्वीर, लड़ाई बाकी बा

छोट - मोट त भइल महाभारत, बाकी—
राखीं तरकस तीर, लड़ाई बाकी बा

जुग - जुग से जे बनल रहल पहचान
जोगावे के जागीर, लड़ाई बाकी बा

हाथ – पाँव के कटल, बाकी बा मन के
कट जाए जन्जीर, लड़ाई बाकी बा

चउहद्दी से नाहिं, भाव से देश बने
करीं कोई तदवीर, लड़ाई बाकी बा

सात

हम सबके आँसुअन के मिजान बा ग़ज़ल
दुख भरल राग के पहचान बा ग़ज़ल

आज सगरो मचल बा——महाभारत
हो गइल इहाँ लहू - लुहान बा ग़ज़ल

बह रहल बाड़ी सगरी शोक के गंगा—
जीअत लाश से भरल मसान बा ग़ज़ल

लउके कतहीं ना, खुशियन के मेला
लागत सुनसान ह, वीरान बा ग़ज़ल

छितराइल बा सबद के आखर - आखर
अरथ के जइसे ढह गइल मकान बा ग़ज़ल

आठ

बिका रहल आज सरे बाजार आदमी
बिकनिहार आदमी बा, कीननिहार आदमी

कब तक ले ढोई बोझ, लहू के तेल से
सवारी भी आदमी ह आ सवार आदमी

पइसा, पद, पैरवी के युग - जहान में
आदमी प पड़ रहल वरियार आदमी

कइसे भरोसा कर सकी राही प राहँ में
आदमी के लूट लिहल-बटमार आदमी

देवे जवाब रोड़ा के पत्थर से धार के
तलवार आदमी, त छिपल कटार आदमी

नव

फगुनहटा जब - जब बहल होई
पोर हीयरा के तब बढ़ल होई

इयाद आई हमार जहिया तहरा
आँख छलकी, मन तरल होई

आहट पर जे तहरा भरम होखे
तीर कवनो इयाद के गड़ल होई

बिना बनवले भला कइसे मीता
प्रश्न कठिन कवनो सहल होई

दरद में डूबी जब अपादमस्तक
तब जाके गीत ऊ ग़ज़ल होई

दस

फेंटा ना ढेबुआ धेल अबकी बेर फगुआ में
मन खेलो का धुरखेल अबकी बेर फगुआ में
हो गइल जुगार सब फेल अबकी बेर फगुआ में
महँगाइल घीव आ तेल अबकी बेर फगुआ में

वन करो कराओ लोग मन के कैदखाना में
हमला में तूड़े जेल अबकी बेर फगुआ में

जुमियो ना पवलन ऊ पाहुन जे दूर देश के
गाड़ी हो गइल डिरेल अबकी बेर फगुआ में

अझुराइल बाटे झोंटा में अक्किल सरदार के
बन्दूक भइल गुरदेल अबकी बेर फगुआ में

जिदिआइल सद्दाम के, सरदारी बूश के
रेती मे सूखल तेल अबकी बेर फगुआ में

एगारह

सत से बिछिल गइल ऊ सतवन्त हो गइल
देखीं त लोग आज के बेअन्त हो गइल

सध सके स्वारथ, मुट्ठी भर लोग के
रोज एक पैदा नया पंथ हो गइल

पिजरा अनुशासन के तूड़ रहल लोग
चोरईं अस मनई उड़न्त हो गइल

हाथ जोड़ जीतला के बात भूल जा
कुर्सी से सट गइल जे सामन्त हो गइल

रचत रहल षड्यंत्र जे मन्दिर के छाँह में
देखते - देखते बहुत बड़ा ऊ संत हो गइल

बारह

बात मन में रहे, अब बहर गइल बा
दुःख त खासे रहे, अब पसर गइल बा

भाव हिरदा में उठ के अब का करी
जब अभावे से जिनगो ई भर गइल बा

तेज झोंका हवा के अब डेरवाई का
आन्ही केतना इहाँ से गुजर गइल बा

कवनो इच्छा अब ना खुशी के रहल
लोर आँखिन से अपना त ढर गइल बा

जान आदमी के साँसत में एतना रहल
जिनगी जोअत बा, आदमी मर गइल बा

तेरह

कवनो दवा के कुछो असर नइखे
निरोग इहाँ अब एको ठवर नइखे

टटाइल रोटीं के छोड़ीं सपना
मिलतो बिन पइसा के जहर नइखे

डोला के डुबावल जाता नइया
एह नदी में त उठतो भँवर नइखे

ना बनी बात चूल्हा एक करके
अगर मन से लोगवा जवर नइखे

गहे - गहे घर में लागल दीमका
अब त ढहे में कवनो कसर नइखे

चउदह

पानी तेरूआर पर चढ़ावे निकलल
लोग नया हथियार गढ़ावे निकलल

नोंच-नोंच में विधुना गइल बा जे
ऊ पुरनके तस्वीर मढ़ावे निकलल

धरती धँसल जा रहल रसातल में
चाँद पर डेग बढ़ावे निकलल

बारूद के ढेर पर खड़ा होके लोग
अहिंसा के पाठ पढ़ावे निकलल

दरद में पड़ के कराहत बा ग़ज़ल
लो खुशी के गीत कढ़ावे निकलल

पन्द्रह

सभे के हाल एके तरह के आज बाटे
केहू से न छिपल केकरो राज बाटे

छोट चिरइयन के हाल मत पूछीं
घात में बइठल बड़का बाज बाटे

सोना के दिन, चानी का रात के सपना
हर कल्पना पर गिर रहल गाज बाटे

खुल के साधत लोग बाटे स्वारथ
उतरल आँख क पानी, न लागत लाज बाटे

दिया देखवलो पर दिन में ना लउके
हर वन में उड़ुआ का माथे ताज बाटे

सोलह

लिखल इ माथे के मिटत नइखे
अंगद के पाँव ह हिलत नइखे

मन बने, अब भला, कइसे दुलहा
दिल के दुलहिन इहाँ मिलत नइखे

खाली गुलाब में इहाँ उगे कांटा
प्यार के फूल अब खिलत नइखे

सभे मरे – जिएला अपने खातिर
दोसरा ला केहू मुअत – जिअत नइख

खाली इमरित पीए के चाहेला
शम्भु हलाहल अब पिअत नइखे

सतरह

बुत रहल आग फूँक के जियावल जाए
बरफ के टुकड़ा अंगोरा बनावल जाए

कर गइल जे देवालन के करिया - करिया
करिखा अब ओकरे मुँह में लगावल जाए

राह रहीम के चलीं अब जमाना नइखे
कबीर अस अब लुक्का लगावल जाए

मत नोचीं, ई देह के मंडी ना ह
देह अब देश के बचावल जाए

चीर सके फइलल अन्हार कें छाती
चलीं फेरू उम्मीद के दीया जरावल जाए

अठारह

अइसन फागुन, फागुन नइखें
लग में आपन पाहुन नइखे

पांवे – पांवे बन्हाइल पायल
सबका पायल रुनझुन नइखे

उनकर मरन त सभ केहू जानल
मुअनी हम त सुनगुन नइखे

एह जिनगी में दुख केकरा ना
पर सबकर दुख दारून नइखे

हम ना चाहीं बनल मसीहा
केकरा में कुछ अवगुन नइखे

छने सूखेला, छन उपलाला
केकर मन कहऽ पुनपुन नइखे

छन में रूसे, माने छन में
कहऽ कवन जन बुचकुन नइखे

जवना में हम डुबीं – उतराईं
मिलल खुशी त मुलकुन नइखे

कइसे बराबर सींझी चाउर
तसली तिरिछा, उझकुन नइखे

उनइस

सगरो बाह् – बाह् हो गइल
बेटा बादशाह् हो गइल

पंच भइल घर के सवांग
माफ हर गुनाह् हो गइल

आदमी के बेवहार से
आदमी तबाह् हो गइल

टूट गइल जोगावल सपन
मीत जब घवाह् हो गइल

चिझुइया जमोट धइ लिह्ल
इनांर के उराह् हो गइल

ग़ज़ल के दरद के बूझे
लोग सब बताह् हो गइल

बीस

केहू न पास बा
केहू न खास बा

मन दूर - दूर बा
लों आस - पास बा

चाहे जे काट ले
जिनिगी त घास बा

फंदा पड़ल गले
भोंथर गँड़ास बा

अदमी क भोड़ से
अदमी तलाश बा

हवा के दोष ई
उखड़त त साँस बा

बुद्धिये बदल गइल
नियरे त नाश बा

जे दर्द आम के
ऊ दर्द खास बा

सब कुछ झोंकर गइल
दहकत पलाश बा

एकइस

निकाल लिहल गइल बा रस, नीम्बू निचोड़ के
करब का रउरा खाली, सीठीए सहोर के

अइसन पोताइल करिखा, सियाह भइल रात
भइल बेकार हर जतन चन्दा - अँजोर के

बाटे सड़क के दुनों तरफ, पाँती बबूर के
थक जइब मनई राह के, कांटा बिटोर के

चेहरे बा खण्ड - खण्ड, समुझीं हमार बात
बेकार मत करीं समय, मूरत अगोर के

बाइस

लइका के लट्टू अइसन बा नाच रहल लोग
सपना के इन्द्रजाल में कुलांच रहल लोग

बाँही में बाँही डाल के घूमत बा रात - दिन
दुश्मन छुपल बा कहवाँ सवांच रहल लोग

जतरा खराब शुरुए जेकर बा हो गइल
पतरा अब झूठ - मूठ के बा बाँच रहल लोग

नकली त असली बन के भइल मांग के टोका
असली के हरदम घँस -घँस बा जाँच रहल लोग

अपने के भोर - भाँथ के बाटे जे जी रहल—
अपने खातिर कबहीं ना बा साँच रहल लोग

लेइस

रहे चाननी छितनार हो गइल
शहर कवनो लाचार हो गइल

शहरे जानत बा शहर के दरद
अंग ओकरे तेरूआर हो गइल

घर-घर से अरथी निकलल अइसे
मरन जइसे त्योहार हो गइल

जहर हर साँस में घोरल बाटे
पीढ़ी-दर-पीढ़ी बेकार हो गइल

कमल सूख गइल पाँक के भीतर
जल पोखर क सेवार हो गइल

एतना बड़ जिन्दगी के घटना
आँख के सोझा इश्तेहार हो गइल

चउबीस

जर रहल बानी जवना आग में, जरे त सही
जिनगी से केहू हमरा अस लड़े त सही

ढेर अगराला महल के नागफनी
कबहीं ऊ हर–सिंगार अस झरे त सही

बेर–बेर मर के देखलवनी हम—
हमरो प' एक बेर केहू, मरे त सही

लोग बस डेरवावे के हाल जानेला
कबहूँ केहू, हमरो डर करे त सही

आन्हो तूफान बा, केतना अन्हार बा
अइसे में दिया अस केहू बरे त सही

पचीस

जंगली व्यवस्था में हम कामिल रहीं ना
अपना अवकाद से हम फाजिल रहीं ना

काहे दो हर नजर हमरे के बन्हलस
बाकिर त कवनो हम कातिल रहीं ना

बिना सोचले समुझले जे हो गइल जमा
ओह भीड़-भाड़ के हम काबिल रहीं ना

अपने भरोस पर लड़ सकब त लड़ब
एहू विचार-बात से हम गाफिल रहीं ना

उठता के उठावे, जे गिरता के गिरावे
ओही सब लोग में हम सामिल रहीं ना

छबीस

दउरल नजर हमार, देखल हजार गाँव
अइसन न बरगद मिलल, जेमें घनेर छाँव

शब्द त उहे रहल, माने बदल गइल
महिमे जे मिट गइल, झूठे के बाटे नाँव

कइसन वसंत बा, जे कोइलर के कूक ना
कागा के बच गइल अब खाली त काँव-काँव

सगरो सभे त जर रहल बा बदला के आग में
बिछावल विसात बा इहाँ, लगावत बा लोग दाँव

अइसन ना मनई इहाँ कर दे किनार जे
कर - कर के छेद सब कोई डुबा रहल बा नाव

सताइस

खा – खा के आश्वासन आदमी अघा गइल
भाषण में केहू के केकरो भोजन भुला गइल

भइल बढ़िया व्यवस्था बाढ़ आ सूखा में
इहवाँ के राशन त उहँवे बँटा गइल

बदरा के राह देख तूहूँ पियासल मन
पानी ला चापाकल ओनही गड़ा गइल

पानी - पत्थर - धूप - जाड़ तोहार त सहले बा
छान्ही – छप्पर सभे हवेली में समा गइल

तोहार बचवन पढ़ ना सकल, एगो सिलेटे बिन
योजना बनावे में टनों कागज ओरा गइल

अठाइस

पास – पास रहियो के लोग दूर – दूर बा
इहाँ के खोज ई कइसन हजूर बा

चलावत मशीन जे, ऊ आदमी मशीन बा
व्यवहार कुर्सी के बनल अइसन हजूर बा

एके बा करम अउर धरम एके बा इहाँ
भेद कायम रंग के कइसन हजूर बा

सुतेला सभे ऊ जे सुतला से करे मना
अनुशासन इहवाँ के अइसन हजूर बा

बीतल दशक चार, व्यवहार बदलल ना
हालत तइसन के त, तइसन हजूर बा

उनतीस

कहीं सुदी ना, बदी बाटे
न्याय कइसन ई संसदी बाटे

उघारीं घूंघ, रूप दिखलाईं
ढूकल मन में हुदबुदी बाटे

अधेड़पन में ई बाँकी चितवन
उठ रहल मन में गुदगुदो बाटे

बीखे बउराइल बीसवीं जाए
स्वागत ! एकइसवीं सदी बाटे

सींची स्नेह - जल से कइसे ?
सूखल रेत अस नदी बाटे

केहू समझावे, मनावे रूसल के
ई झगड़ा बेखदी - बदी बाटे

तनि देखलाईं आरसी ओकरा
जेकरा मन में मोह नारदी बाटे

तन परस पावल फुरहुरी के जे
उड़ रहल मन के फुदगुदी बाटे

तीस

रूप मन में उतार के देखीं
केहू आई, पुकार के देखीं

जिन्दगी आपन भइल किताब कोई
पन्ना - पन्ना उघार के देखीं

सइ सुनार कें खाके जनि रोईं
चोट एके लुहार के देखीं

इलम अंगुरी के उजागर होई
छेड़, तन का सितार के देखीं

धार खाके बा घवाहिल अदमी
तेज भाषा का कटार के देखीं

इहाँ जालिम, जुलुम, जाहिल बाड़ें
राज्य आपन बिहार के देखीं

भुलाइल देश बा आपन कहँवा
खोजीं, मन में विचार के देखीं

एकतीस

दिल के सालेला जे ऊहे बानो लिखीं
जो लिखहीं के बा जिन्दगानी लिखीं

कबले छवले अन्हरिया आ आफत रही
दिन के सोना लिखीं, रात चानी लिखीं

बड़ए जवना के चर्चा हरेक होठ पर
प्यार के हमरा ऊहे कहानी लिखीं

जेकरा जलवा के सगरो मचल शोर बा
ऊ का देखोला, सब आनी - जानी लिखीं

ओकरा उनहे से बाटे कवन फायदा
जे बरसे ना बदरा गुमानी लिखीं